



پविترता तथा नमाज की विधि

رسائل

في الطهارة والصلاة

تأليف

سماحة الشيخ : عبدالعزيز بن باز رحمه الله

فضيلة الشيخ : محمد بن عثيمين رحمه الله



انुवाद :

मुहम्मद सलीम साजिद अल-मदनी

ترجمة

محمد سليم ساجد المدني

ہندی

رسائل فی الطہارۃ والصلاۃ

پवित्रता

तथा नमाज़ की विधि

تألیف:

سماحة الشيخ عبد العزيز بن عبد الله بن باز رحمه الله

فضيلة الشيخ محمد بن صالح العثيمين رحمه الله

ترجمة:

محمد سليم ساجد المدني

سंकलन :

शैख अब्दुल अजीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

शैख मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन

अनुवाद :

मुहम्मद सलीम साजिद अल-मदनी

حقوق الطباعة محفوظة

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات

بغرب الديرة - ص.ب : ١٥٤٤٨٨ الرياض : ١١٧٣٦

هاتف : ٤٣٩١٩٤٢ فاكس : ٤٣٩١٨٥١

ح مكتبة توعية الجاليات بغرب الديرة، ١٤٣٠هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

بن باز، عبدالعزيز بن عبدالله
رسائل في الطهارة والصلاة باللغة الهندية / عبدالعزيز بن عبدالله
بن باز؛ محمد بن صالح العثيمين - الرياض، ١٤٣٠هـ
.. ص : .. سم

ردمك : ٥-٤-٩٨٣٧-٩٩٦٠-٩٧٨

١- الصلاة ٢- الطهارة (فقه اسلامي) أ، العثيمين، محمد بن
صالح (مؤلف مشارك) ب. العنوان

ديوي ٢٥٢,٢ ١٤٣٠/٢١٨٧

رقم الإيداع : ١٤٣٠/٢١٨٧

ردمك : ٥-٤-٩٨٣٧-٩٩٦٠-٩٧٨

विषय सूची

१. नबी (ﷺ) की नमाज का बयान.....	६
लेख : शैख अब्दुल अजीज बिन बाज.....	६
२. जमाअत के साथ नमाज पढ़ना अनिवार्य है.....	३४
लेख : शैख अब्दुल अजीज बिन बाज.....	३४
३. वुजू, स्नान और नमाज	४९
लेख : शैख मुहम्मद बिन सालेह अलउसैमीन.....	४९
४. वुजू का हुक्म एवं उसका तरीका.....	४९
५. स्नान का हुक्म एवं उसकी विधि.....	५०
६. तयम्मूम का हुक्म एवं उसका तरीका	५२
७. नमाज का हुक्म एवं उसके अंदर उपेक्षित (मकरूह) चीजें	५४
८. नमाज को नष्ट करने वाली चीजें	५५

-
९. सज्दये सहव का बयान..... ५७
१०. रोगी के लिए पवित्रता हासिल करने की विधि.... ६२
११. रोगी के लिए नमाज़ पढ़ने की विधि..... ६६



صفة صلاة النبي صلى الله عليه وسلم

تسماحة الشيخ عبد العزيز بن عبد الله بن باز رحمه الله

नबी ﷺ की नमाज़ का बयान

लेख:

अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नबी ﷺ की नमाज का बयान

यह पुस्तिका अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह बिन बाज की ओर से उन प्रत्येक मुसलमानों के लिए है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार आप की तरह नमाज पढ़ने की इच्छा रखते हों। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है :

«صَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي»

“मुझे जिस प्रकार नमाज पढ़ते देखते हो, तुम भी उसी प्रकार नमाज पढ़ो।” (सहीह बुखारी)

१- सर्वप्रथम नमाजी पूर्णरूप से वुजू करे।

अल्लाह तआला के आदेश का पालन करते हुए नमाज पढ़ने वाले को चाहिए कि पूर्णरूप से वुजू करे। जैसाकि अल्लाह का आदेश है :

«يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا
وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ» (المائدة: ६)

“हे ईमान वालो! जब तुम नमाज के लिए उठो तो अपने मुँह तथा कोहनियों सहित अपने हाथों को धो लिया करो, और अपने सिर का मसह कर लो और अपने पाँव टखनों समेत धुल लो।” (अल-मायेदा : ६)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

«لَا تُقْبَلُ صَلَاةٌ بِغَيْرِ طُهُورٍ»

“पवित्रता एवं वुजू के बिना कोई भी नमाज स्वीकार नहीं होती।” (सहीह मुस्लिम)

२- नमाजी किब्ला की ओर मुँह करे।

नमाज पढ़ने वाला जहाँ कहीं भी हो अपने पूरे शरीर के साथ किब्ला (काअबा) की दिशा आकृष्ट हो। फर्ज या नफ़ल जो नमाज पढ़ने का इरादा रखता हो अपने दिल में उसकी नीयत करे, अपनी ज़बान से नीयत के शब्द न निकाले, क्योंकि ज़ुबान से नीयत करने का कोई प्रमाण नहीं है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने कभी ज़बान से नीयत नहीं की।

नमाज पढ़ने वाला इमाम हो या अकेला हो, उसे चाहिए कि सुन्नत के अनुकूल अपने आगे सुतरह (लकड़ी या कोई अन्य वस्तु) रख कर उस ओर नमाज पढ़े, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका हुक्म दिया है।

३- तकबीर तहरीमा “अल्लाहु अकबर” कहे।

नमाज पढ़ने वाले को चाहिए कि सज्दा के स्थान पर अपनी निगाह (दृष्टि) रखते हुए “अल्लाहु अकबर” कहे।

४- “अल्लाहु अकबर” कहते समय अपने दोनों हाथों को कन्धों या कानों के बराबर उठाए।

५- दोनों हाथों को अपने सीने पर बांधे, दाहिना हाथ बाँये हाथ की करतल और जोड़ पर रखे, जैसाकि वार्डल बिन हुज्र एवं कबीसा बिन हुल्ब अत्ताई की हदीस में आया है जिसे उन्होंने अपने पिता के माध्यम से बयान किया है।

६- सुन्नत अनुसार दुआ इस्तिफ़ताह (सना) पढ़े, जो इस प्रकार है :

«اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ

وَالْمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُنْقَى الثُّوبُ
الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي مِنْ خَطَايَايَ بِالْمَاءِ
وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ»

((अल्लाहुम्मा बाइद बैनी व बैना खतायाया कमा
बाअत्ता बैनल मशरिके वल मगरिबे अल्लाहुम्मा
नक्किनी मिन खतायाया कमा युनक्कस्सौबुल
अबयजो मिनदूनसे अल्लाहुम्मग-सिलनी मिन
खतायाया बिलमाये वस्सलजे वलबरदे))

“ऐ अल्लाह! मेरे एवं मेरे गुनाहों (पापों) के बीच
इतना अन्तर कर दे जितना कि पूरब तथा पश्चिम
के बीच तूने अन्तर किया है। ऐ अल्लाह! मुझे
पापों से इस प्रकार पवित्र कर दे जिस प्रकार
सफेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ किया जाता है।
ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों से जल, बर्फ एवं ओलों के
साथ धो दे।” (सहीह बुखारी, मुस्लिम)

और यदि चाहे तो उपर्युक्त दुआ के स्थान पर यह
दुआ पढ़े :

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى
جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ»

((सुब्हानका अल्लाहुम्मा व बिहम्दिका व तबारकस-
मोका व तआला जद्दोका व ला इलाहा गैरुका))

“ऐ अल्लाह! तू पवित्र है, स्तुति एवं प्रशंसायें तेरे ही लिए हैं, तेरा नाम बरकत वाला है, तेरी प्रतिष्ठा सब से महान है, और तेरे अतिरिक्त कोई सत्य पूजित नहीं है।” (अबू दाऊद, त्रिमिजी)

फिर :

«أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ»

((आऊजो बिल्लाहि मिनश शैतानिर रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर रहीम)) पढ़े :

“मैं धिक्कारे शैतान से अल्लाह की शरण माँगता हूँ, (और) अल्लाह दयावान कृपालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।”

उसके बाद सूर: फातिहा पढ़े, जैसाकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है :

«لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ»

“जिसने सूर: फातिहा न पढ़ी उसकी नमाज नहीं।”
(सहीह बुखारी, मुस्लिम)

सूर: फातिहा पढ़ने के बाद "आमीन" कहे । यदि उच्च स्वर वाली (जहरी) नमाज हो, तो उच्च स्वर से "आमीन" कहे । (त्रिमिजी, अबू दाऊद) आमीन का अर्थ है : ऐ अल्लाह! हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ले ।

इस के बाद कुरआन की जो भी सूर: याद हो अपनी सुगमता के मुताबिक पढ़े ।

७- अपने दोनों हाथ दोनों कांधे या दोनों कान की लौ तक उठाकर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए रुकूअ करे, अपना सिर अपनी पीठ के समान रखे, दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर रखे, अपनी उंगलियाँ फैलाए रखे, सुकून एवं संतुष्टि के साथ रुकूअ करे और तीन या उस से अधिक बार यह दुआ पढ़े :

«سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ»

((सुब्हाना रब्बियल अजीम))

“मेरा महान परमात्मा पवित्र है ।”

उपरोक्त दुआ के साथ यह दुआ भी पढ़ना बेहतर है :

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي»

((सुब्हानका अल्लाहुम्मा रब्बना व बिहम्दिका अल्लाहुम्मग फिरली))

“ऐ अल्लाह! तू पवित्र है, तेरे ही लिए प्रशंसा है। ऐ अल्लाह! तू मुझे क्षमा कर दे।” (सहीह बुखारी, मुस्लिम)

८- दोनों हाथ कंधों या कानों के समान उठाकर रुकूअ से अपना सिर उठाए और यदि इमाम हो या अकेला हो तो :

«سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ»

((समिअल्लाहु लिमन हमिदहु)) कहे।

“अल्लाह ने उसकी पुकार सुन ली, जिस ने उसकी प्रशंसा बयान की।”

फिर खड़े रहने (कौमा) की अवस्था में यह दुआ पढ़े :

«رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ مِلْءُ السَّمَوَاتِ وَمِلْءُ الْأَرْضِ، وَمِلْءُ مَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءُ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ»

((रब्बना व लकल हम्दो हम्दन कसीरन तैयिबन

मुबारकन फ़ीह मिल-अस्समावाते व मिल-अलअरजे व मिलआ मा बैनाहुमा व मिलआ मा शेयता मिन शैईन बअदो))

“ऐ हमारे पालनहार! सभी प्रकार की स्तुति एवं प्रशंसायें केवल तेरे ही लिए हैं, प्रशस्त, पवित्र एवं बाबरकत प्रशंसायें, आकाश एवं धरती बराबर तथा उन दोनों के बीच जो कुछ है उसके समान और उसके अतिरिक्त हर उस वस्तु के समान जो तू चाहे।” (सहीह मुस्लिम)

उसके बाद यदि यह दुआ भी पढ़े तो और उत्तम है क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सहीह तौर पर प्रमाणित है :

«أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُنَّا لَكَ عَبْدًا،
اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا
يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ»

«अहलस्सनाये वल मजदे, अहक्को मा क़ालल अब्दु, व कुल्लोना लका अब्दुन, अल्लाहुम्मा ला मानिआ लिमा आतैता, वला मोतिया लिमा मनअ्ता, वला यनफअु जल जदि मिनकल जद्दो))

“ऐ प्रतिष्ठा एवं प्रशंसा वाले ! बँदे ने जो प्रशंसा की उसका पात्र केवल तू ही है, हम सब तेरे ही बन्दे एवं भक्त हैं। ऐ अल्लाह! तू जो देना चाहे उसे कोई रोकने वाला नहीं, और तू जो रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं, तथा किसी धनवान को उसका धन तेरे क्रोध से बचा नहीं सकता।”

और यदि मुक्तदी (अनुयायी) हो तो सिर उठाने के पश्चात केवल “रब्बना व लकल हम्दु” अन्तिम तक पढ़े, अनुयायी “समिअल्लाहु लिमन हमिदुहु” न कहे।

बेहतर यह है कि रुकूअ के बाद क्रियाम की अवस्था में दोनों हाथ सीने पर रखे, जैसाकि रुकूअ से पूर्व वाले क्रियाम में रखा था क्योंकि वाईल बिन हुज्र एवं सहल बिन सअद की हदीस में इसका प्रमाण है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा किया था।

९- “अल्लाहु अकबर” कहकर सज्दा में चला जाये, यदि सम्भव हो तो दोनों हाथों से पहले दोनों घुटने धरती पर रखे और यदि कोई कठिनाई हो तो हाथों को घुटनों से पहले जमीन पर रखे, अपने हाथ एवं पाँव की अंगुलियों को क़िब्ला ओर करे, हाथों की अंगुलियाँ एक दूसरे के साथ मिली हुई हों, सज्दा शरीर के सात अंगों

पर होना चाहिए, यानी माथा नाक के साथ, दोनों हाथ, दोनों घुटने एवं दोनों पाँव की अंगुलियों के पोरों पर।

फिर तीन या उससे अधिक बार यह दुआ पढ़े:

«سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى»

((सुब्हाना रब्बियल आला))

“मैं अपने महान पालन करता की पवित्रता बयान करता हूँ।”

उसके साथ यदि यह दुआ भी पढ़े तो और बेहतर है :

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي»

((सुब्हानका अल्लाहुम्मा, रब्बना व बिहम्दिका, अल्लाहुम्मग फिरली))

“ऐ हमारे पालनकर्ता अल्लाह ! हम तेरी प्रशंसायें एवं पवित्रता बयान करते हैं। ऐ अल्लाह! तू मुझे क्षमा कर दे।”

सज्दे में अधिक से अधिक दुआयें करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है :

«أَمَّا الرُّكُوعُ فَعِظْمُوا فِيهِ الرَّبَّ، وَأَمَّا السُّجُودُ فَاجْتَهِدُوا
فِي الدُّعَاءِ فَقَمِنْ أَنْ يُسْتَجَابَ لَكُمْ» (رواه مسلم)

“रुकूअ में अपने रब की ताजीम (महानता) बयान करो और सज्दा में अधिक से अधिक दुआ करने का प्रयत्न करो, क्योंकि वह स्वीकृति के बहुत निकट होती है।” (सहीह मुस्लिम)

एक अन्य हदीस में आप का फरमान है :

«أَقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ فَأَكْثِرُوا مِنْ
الدُّعَاءِ»

“सज्दा की हालत में बन्दा अपने रब से बहुत समीप (करीब) होता है, अतः सज्दा में अधिक से अधिक दुआ किया करो।” (सहीह मुस्लिम)

फर्ज नमाज हो या नफ़ल, प्रत्येक नमाज में अपने लिए और सभी मुसलमानों के लिए अपने रब से लोक-परलोक की भलाईयों की दुआ करे, सज्दा में अपने बाहु को पहलू (पार्श्व) पेट और जाँघों से दूर रखे, दोनों रान दोनों पिन्डली से अलग रखे, इसी प्रकार दोनों बाहु धरती से उठाकर रखे, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

का फरमान है :

«اعْتَدِلُوا فِي السُّجُودِ وَلَا يَنْبَسِطْ أَحَدُكُمْ ذِرَاعِيَهُ انْبِسَاطَ
الْكَلْبِ»

“सज्दे की हालत में समता किया करो, तुम में से कोई व्यक्ति अपने बाहु कुत्ते की तरह न फैलाये।”
(सहीह बुखारी)

१०- “अल्लाहु अकबर” कहकर अपना सिर उठाये, बायाँ पाँव बिछाकर उस पर बैठ जाये और दायाँ पाँव खड़ा रखे, एवं दोनों हाथ दोनों जाँघों और घुटनों पर रखकर यह दुआ पढ़े :

«رَبِّ اغْفِرْ لِي، رَبِّ اغْفِرْ لِي، رَبِّ اغْفِرْ لِي، اللَّهُمَّ اغْفِرْ
لِي، وَارْحَمْنِي وَارْزُقْنِي وَعَافِنِي وَاهْدِنِي وَأَجْبِرْنِي»

((रब्बिग फिरली, रब्बिग फिरली, रब्बिग फिरली,
अल्लाहुम्मग-फिरली, वरहमनी, वरजुक्नी, व
आफिनी वहदिनी, वजबुरनी))

“ऐ मेरे रब! मुझे क्षमा प्रदान कर, ऐ मेरे रब!
मुझे माफ़ कर दे, ऐ मेरे रब! मेरी मुक्ति कर। ऐ

अल्लाह मुझे क्षमा कर दे, मेरे ऊपर दया कर,
मुझे जीविका प्रदान कर, मुझे शान्ति अता कर,
मुझे सत्य मार्ग दिखा और मेरी हानि पूरी कर दे ।”

जलसा में इस प्रकार इत्तिमेनान एवं सैतुष्टि के साथ बैठे कि रीढ़ की हड्डियाँ अपने स्थान पर लौट आयें जिस प्रकार रुकूअ के बाद संतुलन (एतिदाल) किया जाता है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रुकूअ के बाद एवं दो सज्दों के बीच लम्बा संतुलन किया करते थे।

११- “अल्लाहु अकबर” कहकर दूसरा सज्दा करे और उस में भी उसी प्रकार करे जिस प्रकार पहले सज्दे में किया था ।

१२- “अल्लाहु अकबर” कहकर अपना सिर उठाये और दो सज्दों के बीच बैठने के समान थोड़ी देर सीधा बैठे । इसे “जल्सये इस्तिराहत” कहा जाता है । इस्लामी विद्वानों के दो कथन में से अधिक सहीह राय यह है कि यह बैठक (जल्सये इस्तिराहत) मुस्तहब यानी बेहतर है, यदि कोई उसको छोड़ दे तो कोई बात नहीं है । इस में किसी प्रकार का जिक्र एवं दुआ पढ़ना साबित नहीं है । फिर दूसरी रकअत के लिए खड़ा हो जाये, यदि आसानी हो तो दोनों घुटनों के बल खड़ा हो, परन्तु कोई परिश्रम

हो तो दोनों हाथ धरती पर रखकर खड़ा हो। मुक्तदी (अनुयायी) के लिए इमाम से पहले कोई काम करना अर्थात् अग्रसरता करना जाइज नहीं है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने से अपने सम्प्रदाय को डराया है, इसी प्रकार इमाम के साथ-साथ चलना भी उचित नहीं है, बल्कि सुन्नत यह है कि इमाम की आवाज समाप्त होने के बाद शीघ्र ही उसका अनुसरण करना चाहिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं :

«إِذَا جُعِلَ الْإِمَامُ يُؤْتَمُّ بِهِ فَلَا تَخْتَلِفُوا عَلَيْهِ، فَإِذَا كَبَّرَ فَكَبِّرُوا، وَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا، وَإِذَا قَالَ : سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فَقُولُوا : اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، وَإِذَا سَجَدَ فَاسْجُدُوا» (متفق عليه)

“निःसंदेह इमाम इसलिए निर्धारित किया जाता है कि उसका अनुसरण किया जाये, अतः इमाम का विरोध न करो, जब वह तकबीर “अल्लाहु अकबर” कहे तो तुम तकबीर कहो, जब वह रुकूअ करे तो तुम रुकूअ करो, जब वह “समिअल्लाहु लिमन हमिदहु” कहे तो तुम “रब्बना व लकल

हम्दु” कहो, और जब वह सज्दा करे तो तुम सज्दा करो ।” (सहीह बुखारी, मुस्लिम)

१३- यदि नमाज़ दो रकअत वाली हो (जैसे : फ़ज़्र, जुमा एवं दोनों ईद की नमाज़ें) तो अन्तिम रकअत के दूसरे सज्दा के बाद दाहिना पाँव खड़ा करके बाँये पाँव को बिछाकर बैठ जाये, दाहिना हाथ दाहिने जाँघ पर रखे, शहादत की अंगुली के अतिरिक्त शेष सारी अंगुलियाँ बंद रखे और शहादत वाली अंगुली से अल्लाह के एक होने का संकेत करे, अर्थात् शहादत वाली अंगुली को हिलाए और अल्लाह की वहदानियत (एकत्व) की ओर इशारा करे । यदि छोटी अंगुली और उसके साथ वाली अंगुली को बन्द करके अँगुष्ट एवं बीच वाली अंगुली से हल्का बनाकर शहादत वाली अंगुली से इशारा करे तो भी अच्छा है, यह दोनों विधि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रमाणित हैं । श्रेष्ठ यह है कि कभी एक विधि और कभी दूसरी विधि पर अमल किया जाये । बायाँ हाथ बायें जाँघ एवं घुटने पर रखे फिर तशहहुद की यह दुआ पढ़े :

«التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ

اللّٰهُ الصّٰلِحِيْنَ، اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنْ مُحَمَّدًا
عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ»

«अत्तहिय्यातो लिल्लाहि वस्सलावातो वत्तय्यिबातो
अस्सलामो अलैका अय्योहन्नबियो व रहमतुल्लाहि
व बरकातोहु अस्सलामो अलैना व अला इबादिल
लाहिस्सालेहीन अश्हदो अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व
अश्हदोअन्ना मोहम्मदन अब्दोहु व रसूलोहु»

“सभी प्रशंसायें, नमाज़ें एवं पवित्र चीज़ें अल्लाह के
लिए हैं, ऐ नबी ! आप पर सलाम हो और अल्लाह
की कृपा एवं बरकत नाज़िल हो, हम पर और
अल्लाह के नेक बन्दों पर सलाम हो, मैं गवाही
देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना का
पात्र नहीं, और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह
के बन्दे और उस के दूत (रसूल) हैं ।”

उसके बाद यह पढ़े :

«اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ، اللّٰهُمَّ

بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى
إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

((अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिंव व अला आले मुहम्मदिन कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीमा इन्नका हमीदुम मजीद, अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आले मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीमा इन्नका हमीदुम मजीद))

“ऐ अल्लाह ! दया कर मुहम्मद पर और आले मुहम्मद (संतान, खानदान) पर, जिस प्रकार तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर दया की, निःसंदेह तू प्रशंसा एवं सम्मान वाला है, ऐ अल्लाह ! बरकत नाजिल कर मुहम्मद पर और मुहम्मद की आल पर, जिस प्रकार तूने बरकत नाजिल की इब्राहीम पर और इब्राहीम की आल पर, बेशक तू प्रशंसा और सम्मान वाला है ।”

फिर यह दुआ पढ़ते हुए चार वस्तुओं से अल्लाह तआला की शरण मांगें :

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ، وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ»

((अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजुबिका मिन अजाबे जहन्नम, व मिन अजाबिल क़बरि, व मिन फितनतिल महया वलममात, व मिन फितनतिल मसीहिदज्जाल))

“ऐ अल्लाह तेरी शरण चाहता हूँ नरक के अजाब (प्रकोप) से और क़ब्र के अजाब से और जीवन तथा मृत्यु के फितने से और मसीह दज्जाल के फितने से।”

फिर लोक-परलोक की भलाईयों के लिए जो दुआ चाहे करे, इसी प्रकार अपने माता-पिता और अन्य मुसलमानों के लिए दुआ करने में कोई हरज नहीं है, चाहे फ़र्ज नमाज़ हो अथवा नफ़ल।

फिर दाहिने तथा बाँयी ओर यह कहते हुए सलाम फेरे :

«السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ، السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ

اللَّهُ»

((अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह, अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह))

१४- यदि नमाज तीन रकअत वाली हो, जैसे : मगरिब की नमाज, या चार रकअत वाली हो, जैसे : जुहर, अस् एवं इशा की नमाजें, तो दूसरी रकअत में तशहहुद और दरूद पढ़ने के बाद घुटनों के बल खड़ा हो जाये, “अल्लाहु अकबर” कहकर कंधों के समान हाथ उठाए, फिर दोनों हाथ सीने पर रखे और केवल सूरः फातिहा पढ़े ।

यदि जुहर नमाज की तीसरी और चौथी रकअत में कभी-कभार सूरः फातिहा के अतिरिक्त अन्य सूरः भी पढ़ ले तो इस में कोई हानि नहीं है, क्योंकि ऐसा करना हजरत अबू सईद रजि अल्लाहु अन्हु की रिवायत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रमाणित है ।

फिर मगरिब नमाज की तीसरी रकअत और जुहर, अस् एवं इशा की चौथी रकअत के बाद तशहहुद पढ़े और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजे तथा नरक और क़ब्र की यातना एवं मसीहे दज्जाल के फ़ित्ने से अल्लाह की शरण मांगे और अधिक से अधिक दुआयें

करे, जिस प्रकार दो रकअत वाली नमाज के बयान में गुजर चुका है।

परन्तु इस तशहहुद की बैठक में (तवरूक) करे, अर्थात् दाहिना पैर खड़ा रखे और उसके नीचे से बाँया पैर निकाल कर कूल्हे (नितम्ब) पर बैठे, जैसाकि अबु हुमैद की हदीस में इसका प्रमाण है।

फिर ((अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह, अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह)) कहकर दाहिने और बाँयें ओर सलाम फेरे।

फिर तीन बार «أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ» (अस्तगफिरुल्लाह) कहे और यह दुआ पढ़े :

«اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ يَا ذَا
الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ»

((अल्लाहुम्मा अनतस-सलामु व मिनकस-सलामु तबारकता या जल-जलालि वल इकराम))

“ऐ अल्लाह! तूही सलामती वाला है और तेरी ही ओर से सलामती है, ऐ प्रतिष्ठा एवं महानता वाले! तू बड़ी बरकत वाला है।”

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

((ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहु
लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुआ अला कुल्ले
शैईन कदीर))

“अल्लाह के सिवाय कोई सत्य पूजित नहीं, वह
अकेला है उसका कोई साझी नहीं, राज्य उसी का
है, सभी प्रशंसायें उसी के लिए हैं एवं वह प्रत्येक
वस्तु पर सर्वशक्तिमान है।”

«اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا
يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ»

((अल्लाहुम्मा ला मानेआ लिमा आतैता वला
मोतिया लिमा मनअता वला यनफओ जल जहे
मिन्कल जद्दो))

“ऐ अल्लाह! तू जो देना चाहे उसे कोई रोकने
वाला नहीं, और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला
नहीं और किसी शान वाले को उसकी शान तेरे
दण्ड से नहीं बचा सकती।”

«لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا
إِيَّاهُ، لَهُ النُّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الشَّانُ الْحَسَنُ، لَا إِلَهَ إِلَّا
اللَّهُ، مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ»

((ला-हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि, ला
इलाहा इल्लल्लाहु, वला नाबुदो इल्ला ईय्याहु,
लहुन नेमतो व लहुल फ़जलो, व लहुस-सनाउल
हसनु । ला इलाहा इल्लल्लाहु, मुखलिसीना लहुद-
दीन, वलौ करिहल काफिरून))

“अल्लाह की मदद एवं तौफ़ीक के बिना न तो
हानि से बचने की ताक़त है और न लाभदायक
कार्य करने की शक्ति है, अल्लाह के सिवाय कोई
सत्य माबूद नहीं, उसके सिवाय हम किसी की
पूजा नहीं करते, नेमत (प्रदान) एवं फ़ज़ल
(अनुकम्पा) उसी के लिए हैं और उसी के लिए शुभ
प्रशंसा है । अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूजित
नहीं, हम अपनी इबादत एवं आराधना केवल
अल्लाह के लिए विशिष्ट करते हैं, यद्यपि अधर्मी
लोग अप्रसन्न हों ।”

इस के बाद ३३ बार «سُبْحَانَ اللَّهِ» (सुब्हानल्लाह) ३३ बार, «الْحَمْدُ لِلَّهِ» (अलहम्दुलिल्लाह) ३३ बार, «اللَّهُ أَكْبَرُ» (अल्लाहु अकबर) कहे और सौ का अंक पूरा करने के लिए केवल एक बार यह दुआ पढ़े :

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

((ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहु
लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुआ अला कुल्ले
शैईन कदीर))

“अल्लाह के सिवाय कोई सत्य पूजित नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, राज्य उसी का है, सभी प्रशंसायें उसी के लिए हैं एवं वह प्रत्येक वस्तु पर सर्वशक्तिमान है।”

प्रत्येक नमाज के बाद «آية الكرسي» (आयतुल कुसी) «قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ» (कुल होवल्लाहु अहद) «قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ» (कुल अऊजो बिरब्बिल फलक) और «قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ» (कुल अऊजो बिरब्बिन नास) पढ़े, फज्र एवं मगरिब की नमाज के बाद उपरोक्त तीनों सूरातों का तीन बार पढ़ना मुस्तहब (बेहतर) है, जैसाकि सहीह हदीस में इसका प्रमाण है।

इसी प्रकार फ़ज़्र एवं मगरिब नमाज़ के बाद उपरोक्त दुआओं के अतिरिक्त दस बार यह दुआ पढ़ना भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रमाणित है :

«لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ»

((ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहु लहुल मुल्को व लहुल हम्दो युहई व युमीतो वहुवा अला कुल्लि शैईन कदीर))

“अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूजित नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, राज्य उसी का है, सभी प्रशंसायें उसी के लिए हैं, वही जीवन और मृत्यु प्रदान करता है और वह हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है ।”

यदि नमाज़ी इमाम हो तो तीन बार «أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ» (अस्तगफिरुल्लाह) और

«اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ»

((अल्लाहुम्मा अनतस सलाम व मिनकस सलाम
तबारकता या जलजलाले वल इकराम))

पढ़ने के बाद अपने पीछे नमाज़ियों की ओर अपना चेहरा कर के बैठे, फिर बाक़ी वर्णित दुआ, अज़कार पढ़े, जैसाकि कई हदीसों में इसका बयान आया है, उन्हीं में से सहीह मुस्लिम के अन्दर हज़रत आईशा रज़ि अल्लाहु अन्हा की एक हदीस है। यह सारे जिक्र व अज़कार का पढ़ना सुन्नत है फ़र्ज (अनिवार्य) नहीं है।

प्रत्येक मुसलमान पुरुष एवं स्त्री के लिए मुस्तहब (बेहतर) है कि यदि यात्रा की अवस्था में न हो तो बारह रकअत “रवातिब” सुन्नत पढ़ना न छोड़े, यानी जुहर से पहले चार रकअत, जुहर के बाद दो रकअत, मगरिब के बाद दो रकअत, इशा के बाद दो रकअत और फ़ज्र से पहले दो रकअत।

सहीह मुस्लिम के अन्दर हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«مَنْ صَلَّى ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً فِي يَوْمِهِ وَلَيْلَتِهِ تَطَوُّعاً
بَنَى اللَّهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ»

“जो दिन-रात मिलाकर बारह रकअत नफल पढ़े उस के लिए अल्लाह जन्नत में घर बनायेगा।”

इमाम त्रिमिजी ने इस हदीस को बयान करने के बाद बारह रकअतों की वही तफ़सील बताई है जो ऊपर बयान हो चुकी है।

परन्तु यात्रा की अवस्था में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुहर, मग़रिब और इशा की सुन्नत छोड़ दिया करते थे, केवल फ़ज़्र की सुन्नत और वित्र पढ़ते थे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे लिए उत्तम आदर्श (नमूना) हैं, जैसाकि अल्लाह तआला का वचन है:

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

“अवश्य तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है।” (अल-अहज़ाब : २१)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«صَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي»

“तुम नमाज़ उसी प्रकार पढ़ो जिस प्रकार तुम मुझे पढ़ते हुए देखते हो” (सहीह बुखारी)

अल्लाह प्रत्येक मुसलमानों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण करने और नबी के समान नमाज पढ़ने की तौफ़ीक़ एवं साहस प्रदान करे । आमीन

والله ولي التوفيق

وصلی الله وسلم علی نبینا محمد بن عبد الله وعلی آله
وأصحابه وأتباعه بإحسان إلى يوم الدين.



وجوب أداء الصلاة مع الجماعة

لسماحة الشيخ عبد العزيز بن عبد الله بن باز رحمه الله تعالى

जमाअत (समूह) के साथ
नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है

लेख:

अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है

यह संदेश अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह बिन बाज की ओर से सभी मुसलमानों के लिए है, अल्लाह हम सब को शुभ कार्य करने की तौफ़ीक़ एवं साहस प्रदान करे और हमें संयमी एवं सदाचारी भक्त बनाये। आमीन

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातोहु

मुझे यह जानकारी मिली है कि बहुत से लोग जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने में आलस्य एवं लापरवाही से काम लेते हैं और यह तर्क पकड़ते हैं कि कुछ उलमाओं ने इसकी छूट दी है।

यह एक गम्भीर समस्या है, इसकी खतरनाकी को बयान करना मेरे लिए अनिवार्य था, किसी मुसलमान के लिए जाइज नहीं है कि उस मुआमले में कोताही करे जिसकी शान और महानता को अल्लाह ने अपनी पवित्र किताब क़ुरआन में एवं उसके सर्वश्रेष्ठ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हदीस में बयान किया है।

अल्लाह ने अपनी पवित्र किताब में नमाज़ का चर्चा

विशेषरूप से कई स्थानों में किया है, उसकी महानता एवं श्रेष्ठता की ओर मुसलमानों का ध्यान आकर्षित किया है, उसकी सुरक्षा करने एवं उसे जमाअत के साथ अदा करने का आदेश दिया है और नमाज़ के साथ आलस्य एवं लापरवाही को मुनाफिकों (द्वयवादी) की रीति करार दिया है ।

अल्लाह तआला का वचन है :

﴿حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَى وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ﴾

“नमाज़ों की सुरक्षा करो विशेषकर मध्यवाली नमाज़ की और अल्लाह तआला के लिए नम्रता-पूर्वक खड़े रहा करो ।” (अल-बकरह : २३८)

नमाज़ों के प्रति बन्दा की ओर से सुरक्षा और सम्मान को कैसे जाना जा सकता है जबकि वह अपने भाईयों के साथ नमाज़ पढ़ने से पीछे रहता और लापरवाही करता हो । हालाँकि अल्लाह तआला का कथन है :

﴿وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ﴾

“और नमाज़ स्थापित करो एवं ज़कात दो और रुकूअ करने (झुकने) वालों के साथ रुकूअ करो (झुक जाओ)।” (अल-बक्ररह : ४३)

इस पवित्र आयत के अन्दर यह स्पष्टीकरण है कि जमाअत (समूह) के साथ नमाज़ पढ़ना जरूरी है। यदि मक़सद केवल नमाज़ स्थापित करना होता तो इसके अन्त में “रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो” लाने का फ़ायेदा क्या होगा ? क्योंकि नमाज़ स्थापित करने का आदेश तो आयत के आरम्भ में ही दे दिया गया है।

अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَرَائِكُمْ وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَى لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ﴾

“और जब आप उन में हों और उन के लिए नमाज़ की स्थापना करें तो चाहिए कि उनका एक गुट आप के साथ हथियार लिए खड़ा हो, फिर जब यह सज्दा कर चुकें तो यह हटकर तुम्हारे पीछे आ

जायें और दूसरा गुट जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी है वह आ जाये और तेरे साथ नमाज़ अदा करे और अपना बचाव तथा अपने हथियार लिए रहे।”
(अन-निसा : १०२)

उपरोक्त आयत में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को युद्ध की स्थिति में भी जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया है, जबकि मुसलमान तथा काफ़िरों की सेनायें आमने-सामने युद्ध के लिए तैयार खड़ी हों तथा एक क्षण की भी उपेक्षा मुसलमानों के लिए अत्यधिक हानिकारक सिद्ध हो सकती हो तो भला बताईये कि शांतिपूर्ण अवस्था में जमाअत को छोड़कर अकेले नमाज़ पढ़ना कैसे उचित होगा ?

यदि किसी को जमाअत के साथ नमाज़ न पढ़ने की छूट दी जाती तो युद्ध के मैदान में शत्रुओं का मुकाबला करने वाले मुजाहिदीन इस के सहीह पात्र थे जिन्हें दुश्मनों की ओर से आक्रमण का हमेशा भय लगा होता है । ऐसी संकटपूर्ण घड़ी में जमाअत से अलग होकर नमाज़ पढ़ने की सुविधा का न होना स्पष्ट करता है कि जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है तथा जमाअत से अलग एवं पीछे रहना किसी के लिए जाइज नहीं है ।

हजरत अबु हुरैरह रजि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

«لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أُمَرَ بِالصَّلَاةِ فَتَقَامُ ثُمَّ أُمَرَ رَجُلًا أَنْ يُصَلِّيَ بِالنَّاسِ، ثُمَّ أُنْطَلِقَ بِرِجَالٍ مَعَهُمْ حُزْمٌ مِنْ حَطَبٍ، إِلَى قَوْمٍ لَا يَشْهَدُونَ الصَّلَاةَ فَأَحْرِقَ عَلَيْهِمْ بُيُوتَهُمْ» (متفق عليه)

“मैंने निश्चित रूप से यह संकल्प किया है कि नमाज स्थापित करने का आदेश दूँ और एक व्यक्ति को इमामत करने का हुक्म दूँ फिर कुछ व्यक्तियों के साथ लकड़ियाँ लेकर उन लोगों के पास जाऊँ जो नमाज के लिए जमाअत में सम्मिलित नहीं होते और उनके घरों को जला डालूँ।” (सहीह बुखारी, मुस्लिम)

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि अल्लाहु अन्हु कहते हैं :

«لَقَدْ رَأَيْتَنَا وَمَا يَتَخَلَّفُ عَنِ الصَّلَاةِ إِلَّا مُنَافِقٌ عِلْمَ نِفَاقِهِ، أَوْ مَرِيضٌ، وَإِنْ كَانَ الْمَرِيضُ لِيَمْشِيَ بَيْنَ

الرَّجُلَيْنِ حَتَّى يَأْتِيَ الصَّلَاةَ» (رواه مسلم)

“हम लोग यही समझते हैं कि जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने से वही व्यक्ति पीछे रहता है जो मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) है, जिसका निफ़ाक़ स्पष्ट है अथवा रोगी है, जबकि रोगी भी (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवनकाल में) दो व्यक्तियों के कंधे पर हाथ रखकर चलता था और नमाज़ (जमाअत) में शरीक होता था ।” (सहीह मुस्लिम)

उन्होंने यह भी फ़रमाया :

«إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَّمَنَا سُنْنَ الْهُدَى وَإِنَّ مِنْ سُنَنِ الْهُدَى الصَّلَاةَ فِي الْمَسْجِدِ الَّذِي يُؤَذَّنُ فِيهِ» (رواه مسلم)

“नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हमें दीन एवं हिदायत (निर्देश) की बातें सिखाई, और इन्हीं हिदायत की बातों में से यह है कि उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ी जाये जिस में अज़ान होती हो ।” (सहीह मुस्लिम)

सहीह मुस्लिम ही के अन्दर उनका यह भी कथन है :

«مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَلْقَى اللَّهَ غَدًا مُسْلِمًا فَلْيَحَافِظْ عَلَى هَؤُلَاءِ

الصَّلَوَاتِ، حَيْثُ يُنَادَى بِهِنَّ، فَإِنَّ اللَّهَ شَرَعَ لِنَبِيِّكُمْ سُنْنَ
الْهُدَى، وَإِنَّهُنَّ مِنْ سُنَنِ الْهُدَى وَلَوْ أَنَّكُمْ صَلَّيْتُمْ فِي
بُيُوتِكُمْ كَمَا يُصَلِّي هَذَا الْمُتَخَلِّفُ فِي بَيْتِهِ لَتَرَكْتُمْ سُنَّةَ
نَبِيِّكُمْ وَلَوْ تَرَكْتُمْ سُنَّةَ نَبِيِّكُمْ لَضَلَلْتُمْ، وَمَا مِنْ رَجُلٍ
يَتَطَهَّرُ فَيُحْسِنُ الطُّهُورَ، ثُمَّ يَعْمَدُ إِلَى مَسْجِدٍ مِنْ هَذِهِ
الْمَسَاجِدِ إِلَّا كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بِكُلِّ خُطْوَةٍ يَخْطُوهَا حَسَنَةً،
وَيَرْفَعُهُ بِهَا دَرَجَةً، وَيَحُطُّ عَنْهُ بِهَا سَيِّئَةٌ، وَلَقَدْ رَأَيْنَا وَمَا
يَتَخَلَّفُ عَنْهَا إِلَّا مُنَافِقٌ مَعْلُومُ النِّفَاقِ، وَلَقَدْ كَانَ الرَّجُلُ
يُؤْتَى بِهِ يُهَادَى بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ حَتَّى يُقَامَ فِي الصَّفِّ»

“जो इस बात से प्रसन्न हो कि प्रलय (क्रयामत) के दिन मुसलमान होकर अल्लाह से भेंट करे उसे चाहिए कि इन नमाजों की सुरक्षा करे जहाँ अज्ञान होती हो, इसलिए कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए सहीह मार्ग और तरीके निर्धारित कर दिए हैं और यह नमाजें भी उन्हीं में से हैं, यदि तुम इन को अपने घरों में पढ़ो, जैसा फ़र्ला व्यक्ति जमाअत छोड़कर

अपने घर में नमाज़ पढ़ता है, तो निःसंदेह तुम ने अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का तरीका छोड़ दिया, और अगर तुम अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मार्ग छोड़ दोगे तो निःसंदेह गुमराह (पथभ्रष्ट) हो जाओगे, और जो व्यक्ति पूर्ण रूप से तहारत (पवित्रता) हासिल करे फिर इन मस्जिदों में से किसी मस्जिद की ओर चले तो अल्लाह उसके हर कदम के बदले एक नेकी लिखता है, एक दर्जा (श्रेणी) उच्च करता है और एक बदी (अनिष्ट) घटाता है, और हम यही देखते थे कि नमाज़ (जमाअत) से वही व्यक्ति पीछे रहता था जो मुनाफ़िक (द्वयवादी) हो एवं जिसका निफ़ाक (द्वयवाद) बिल्कुल स्पष्ट हो, हालाँकि लाचार आदमी दो व्यक्तियों के कंधों पर हाथ रखकर चलाया जाता था और सफ़ में खड़ा कर दिया जाता था।”

हज़रत अबु हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है:

«أَتَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَجُلٌ أَعْمَى، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّهُ لَيْسَ لِي قَائِدٌ يَقُودُنِي إِلَى الْمَسْجِدِ، فَسَأَلَ رَسُولَ

الله ﷻ أَنْ يُرَخَّصَ لَهُ، فَيَصِلِي فِي بَيْتِهِ، فَرَخَّصَ لَهُ، فَلَمَّا وَلَّى دَعَاهُ فَقَالَ: «هَلْ تَسْمَعُ النِّدَاءَ (الْأَذَانَ)؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَأَجِبْ» [رواه مسلم]

“एक अन्धे व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह निवेदन किया : ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे कोई हाथ पकड़ कर मस्जिद तक लाने वाला नहीं है, तो क्या मेरे लिए इस की छूट है कि मैं अपने घर में नमाज़ पढ़ लिया करूँ ? आप ने पूछा : क्या तुम अज्ञान सुनते हो ? उस ने कहा : हाँ, मैं अज्ञान सुनता हूँ, तो आप ने फरमाया : फिर तुम मस्जिद में आया करो ।” (सहीह मुस्लिम)

इस सम्बन्ध में बहुत सी हदीसों हैं जिन में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जमाअत के साथ अल्लाह के उन घरों (मस्जिदों) में नमाज़ अदा करना अनिवार्य है जिन्हे अल्लाह ने बलन्द करने और उन में अपने जिक्र किए जाने का आदेश दिया है ।

अतः प्रत्येक मुसलमान पर जरूरी है कि इसका ख्याल रखे, इसकी ओर पहल करे, अपनी संतान, अपने

परिवार के लोग, अपने पड़ोसी एवं अपने समस्त मुसलमान भाईयों को इस की दावत दे और नसीहत करो।

हम अल्लाह एवं उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश का पालन करें, जिस चीज से अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने डराया है उस से दूर रहें और निफाक वालों की अनुरूपता से बचें, जिनकी अल्लाह ने निंदा की है, और सूचित किया है कि मुनाफिकों की गन्दी चालों में से एक यह है कि नमाजों में सुस्ती करते हैं। जैसाकि अल्लाह का वचन है:

﴿إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَى يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ مُذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَلِكَ لَا إِلَى هَؤُلَاءِ وَلَا إِلَى هَؤُلَاءِ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا﴾

“निःसंदेह मुनाफिक (अवसरवादी) अल्लाह तआला से छल कर रहे हैं, और वह उन्हें उस छल का बदला देने वाला है, और जब नमाज को खड़े होते हैं तो बड़े आलस्य की स्थिति में खड़े होते हैं, केवल लोगों को दिखाते हैं और अल्लाह की याद

बस नाम मात्र करते हैं। वह मध्य में ही संकोच में हैं, न पूर्णरूप से उनकी ओर न उचित रूप से इनकी ओर और जिसे अल्लाह तआला भटका दे तो तू उसके लिए कोई मार्ग नहीं पायेगा।” (अन-निसा : १४२, १४३)

जमाअत के साथ नमाज पढ़ने से पीछे रहना पूर्णरूप से नमाज छोड़ने का कारण बन जाता है, और यह सबको मालूम है कि नमाज का छोड़ना कुफ्र (अधर्म), कुमार्गता एवं इस्लाम की परिधि से निष्कासित होना है।

जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है :

«بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ تَرْكُ الصَّلَاةِ» (أَخْرَجَهُ
مُسْلِمٌ فِي صَحِيحِهِ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ)

“मानव एवं कुफ्र और शिर्क के बीच नमाज छोड़ देने का अन्तर है।” (सहीह मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया

«الْعَهْدُ الَّذِي بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ الصَّلَاةُ، فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ كَفَرَ»

“हमारे और इन (काफ़िरों) के बीच अन्तर करने वाली चीज़ नमाज़ है, तो जिसने नमाज़ छोड़ दी वह काफ़िर (इस्लाम से खारिज) हो गया ।”
(अहमद, त्रिमिज़ी, नसाई, इब्ने माजह)

अत्यधिक कुरआनी आयतों एवं हदीसों में नमाज़ की प्रतिष्ठा एवं महानता को बयान किया गया है और उसकी सुरक्षा करने पर जोर दिया गया है, एवं उसके छोड़ने और सुस्ती बरतने से डराया गया है ।

अतः प्रत्येक मुसलमान पर ज़रूरी है कि नमाज़ उसके निर्धारित समय पर पढ़े, उसे अल्लाह द्वारा बताये गये तरीका के अनुकूल अदा करे, उसे अल्लाह के घरों (मस्जिदों) में मुसलमानों के साथ मिलकर जमाअत के साथ अदा करे, ताकि अल्लाह एवं उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा का पालन हो सके, और अल्लाह तआला के प्रकोप एवं दुखदायी दण्ड से बचा जा सके ।

जब हक़ (सत्य) जाहिर हो जाये और उस के तर्क एवं प्रमाण स्पष्ट हो जायें, तो फिर किसी के लिए यह जाइज़ नहीं है कि किसी व्यक्ति की राय और विचार को लेकर सत्य मार्ग को छोड़ दे । अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا﴾

“फिर यदि किसी बात में मतभेद करो तो उसे अल्लाह तथा रसूल की ओर लौटाओ, यदि तुम्हें अल्लाह तथा क्रियामत (प्रलय) के दिन पर ईमान है । यह सर्वश्रेष्ठ है और परिणाम अनुसार बहुत अच्छा है ।” (अन-निसा : ५९)

अल्लाह तआला का यह भी वचन है :

﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾

“जो लोग रसूल के आदेश का विरोध करते हैं, उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई अत्यन्त घोर दुर्घटना न आ पड़े, अथवा उन्हें कोई दुख की मार न पड़े ।” (अल-नूर : ६३)

स्मरण रहे कि जमाअत के साथ नमाज अदा करने में अनेक फायदे एवं कूटनीतियाँ हैं, जैसे : आपसी जान-

पहचान, शुभ एवं संयम कार्य में एक दूसरे का सहयोग, सत्य की वसीयत और उस पर धैर्य रखने का उपदेश, पिछड़े व्यक्ति को साहस दिलाना, मूर्ख को शिक्षा देना, मुनाफ़िक (द्वयवादी) पर कड़ाई करना, मुनाफ़िकों की रीति से दूर रहना, बन्दों के बीच अल्लाह की निशानियों (प्रतीकों) का इजहार (प्रकटन) करना, वचन एवं कर्म के माध्यम से अल्लाह की ओर बुलाना, आदि ।

अल्लाह मुझे और आप सब को उस मार्ग पर चलने की तौफ़ीक़ (साहस) प्रदान करे जिस में उसकी प्रसन्नता एवं लोक परलोक की भलाई हो, हम सबको नफ़स की बुराईयों एवं दुश्चरित्रताओं से अपनी शरण में रखे, तथा अधर्मियों और पाखंडियों की अनुरूपता से दूर रखे, निःसंदेह अल्लाह तआला दानशील एवं कृपालु है ।

वस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि व बरकातोहु ।

وصلی الله وسلم علی نبینا محمد وآله وصحبه



الوضوء والغسل والصلاة

لفضيلة الشيخ / محمد بن صالح العثيمين رحمه الله تعالى

वुज़ू, स्नान और नमाज़

लेख :

शैख मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन

बुज़ू, स्नान और नमाज़

الحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام على خاتم النبيين
وسيد الخلق أجمعين نبينا محمد وعلى آله وأصحابه أجمعين،
أما بعد !

अल्लाह की दया और कृपा का मुहताज बन्दा
(मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन) का कहना है कि यह
पुस्तिका कुरआन एवं हदीस के अनुकूल बुज़ू, स्नान एवं
नमाज़ के बयान पर आधारित है।

बुज़ू :

बुज़ू: छोटी अपवित्रता जैसे : पेशाब, पाखाना, हवा का
निकलना, गहरी नींद एवं ऊँट के गोश्त खाने के पश्चात
बुज़ू के ज़रिए पवित्रता प्राप्त करना अनिवार्य है।

बुज़ू का तरीका :

- अपने हृदय में बुज़ू की नीयत (संकल्प) करे, जबान
से नीयत के शब्द न निकाले, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु
अलैहि वसल्लम बुज़ू, नमाज़ या किसी अन्य इबादत

(आराधना) के समय ज़बान से नीयत नहीं करते थे । अल्लाह तआला दिलों के भेदों को जानता है, दिल में क्या है ? अल्लाह को बताने की ज़रूरत नहीं है ।

२. फिर “बिस्मिल्लाह” कहे ।
३. फिर दोनों हाथ पहुँचों तक तीन बार धोये ।
४. फिर तीन बार कुल्ली करे और तीन बार नाक में पानी डाले ।
५. फिर अपने चेहरे को तीन बार धोए । (एक कान से दूसरे कान और माथे के बाल उगने के स्थान से लेकर दाढ़ी के निचले हिस्से तक का भाग चेहरा में दाखिल है)
६. फिर दोनों हाथों को उँगलियों के आरम्भ से लेकर कोहनी तक तीन बार धोए । पहले दायाँ हाथ फिर बायाँ हाथ धोए ।
७. फिर अपने सिर का एक बार मसह करे । मसह इस प्रकार करे कि दोनों हाथों को पानी से भिगाकर उसे सिर के अगले भाग से आरम्भ कर के सिर के पिछले भाग (गुद्दी) तक ले जाए, फिर वहाँ से सिर के अगला

हिस्सा पर वापस लाए जहाँ से शुरू किया था ।

८. फिर कानों का एक बार मसह करे । मसह इस तरह करे कि शहादत की उँगलियाँ दोनों कानों के सुराखों में डाल कर कानों की पीठ पर अँगूठों के जरिए मसह करे ।
९. फिर उँगलियाँ समेत दोनों पाँव टखनों तक तीन बार धोए । पहले दायाँ फिर बायाँ पाँव धोए ।



स्नान (गुस्ल)

बड़ी अपवित्रता जैसे : जनाबत (पत्नी के साथ संभोग) हैज (पुष्प, माहवारी) आदि से पवित्र होने के लिए स्नान करना अनिवार्य है ।

स्नान करने का तरीका :

१. अपने दिल में गुस्ल करने की नीयत करे, नीयत के शब्द ज़बान से न निकाले ।
२. “फिर बिस्मिल्लाह” कहे ।
३. फिर पूर्णरूप से बुजू करे ।
४. फिर तीन बार अपने सिर पर पानी डाले ।
५. फिर पूरे शरीर को धोए ।

तयम्मूम :

यदि पानी उपलब्ध न हो अथवा पानी के सेवन से किसी हानि का खतरा हो तो ऐसी स्थिति में पानी के बदले पवित्र मिट्टी के द्वारा पवित्रता प्राप्त करने का नाम “तयम्मूम” है ।

तयम्मूम करने का तरीका :

वुजू अथवा स्नान में से जिसके बदले तयम्मूम कर रहा हो उसकी नीयत करे, फिर दोनों हाथों को पवित्र मिट्टी पर मारे और अपने चेहरे एवं दोनों हथेलियों पर मले ।



नमाज़

नमाज़ वचन एवं कर्म पर आधारित इबादत का नाम है, जो “अल्लाहु अकबर” से आरम्भ होकर “अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह” पर समाप्त होती है।

जब कोई व्यक्ति नमाज़ पढ़ने का इरादा करे तो उस पर जरूरी है कि सर्वप्रथम पाकी हासिल करे, छोटी अपवित्रता हो तो वुजू करे और यदि बड़ी अपवित्रता हो तो स्नान करे।

पानी न मिले या पानी के प्रयोग से किसी हानि का भय हो तो तयम्मूम करे। अपने शरीर, पोशाक एवं नमाज़ पढ़ने के स्थान को पाक व साफ़ रखे।

नमाज़ पढ़ने का तरीका :

इस किताब के आरम्भ में नमाज़ पढ़ने का तरीका बयान हो चुका है, अतः उसे यहाँ पुनः बयान करना उचित नहीं समझा गया। (अनुवादक)

नमाज़ के अन्दर मकरूह (उपेक्षित) चीज़ें :

१. नमाज़ में इधर-उधर झाँकना मकरूह है, एवं ऊपर

(आकाश) की ओर नज़र उठाकर देखना हराम है ।

२. बिना आवश्यकता किसी प्रकार की हरकत करना घृणित है । (जैसे : बदन हिलाना, जेब में हाथ डालना, कपड़ा ठीक करना, दाढ़ी से खेलना, आदि) (अनुवादक)
३. मशगूल (संलग्न) करने वाली चीज़ को लेकर नमाज़ पढ़ना मकरूह है, जैसे अपने साथ कोई भारी सामान अथवा आकर्षित करने वाली रंगीन चीज़ आदि रखना।
४. नमाज़ के अन्दर कमर पर हाथ रखना ग़लत और मकरूह है ।

नमाज़ को बातिल (नष्ट) करने वाली चीज़ें :

१. जान बूझकर बातें करने से नमाज़ बातिल हो जाती है, चाहे बातें थोड़ी ही क्यों न हों ।
२. पूरे शरीर को क़िब्ला (काबा) की दिशा से हटाने पर नमाज़ नष्ट हो जाती है ।
३. हवा के निकलने एवं वुजू और गुस्ल को अनिवार्य करने वाली चीज़ों के पेश आने पर नमाज़ बातिल हो जाती है ।

४. बिना जरूरत लगातार हरकतें करने से नमाज बातिल हो जाती है।
५. हँसी थोड़ी ही क्यों न हो उस से नमाज बातिल हो जाती है।
६. जान बूझकर रुकूअ या सज्दा या कौमा या काअदा ज्यादा करने से नमाज नष्ट हो जाती है।
७. जान बूझकर इमाम से सबक़त (अग्रसरता) करने पर नमाज बातिल हो जाती है।



सज्दये सहव का बयान

१. जब नमाज पढ़ने वाला नमाज के अन्दर भूल जाए और रुकूअ, सज्दा, कौमा या काअदा ज़्यादा कर बैठे, तो उसे चाहिए कि सलाम फेरने के पश्चात दो बार सज्दये सहव करे और फिर सलाम फेरे।

उदाहरण : जैसे कोई व्यक्ति जोहर की नमाज पढ़े और भूल कर पाँचवी रकअत के लिए खड़ा हो जाए, फिर उसे स्वयं याद आ जाए या कोई व्यक्ति याद दिलाए, तो उसे चाहिए कि इस रकअत को छोड़कर बिना तकबीर कहे बैठ जाए, फिर अन्तिम तशहहुद पढ़े और सलाम फेरे, उसके बाद दो बार सज्दा करे और फिर सलाम फेरे।

इसी प्रकार यदि उसे नमाज में याद न आकर सलाम फेरने के बाद याद आए कि उसने एक रकअत ज़्यादा पढ़ी है तो दो बार सज्दये सहव करे और फिर सलाम फेरे।

२. जब कोई व्यक्ति नमाज पूरी किये बिना भूल कर सलाम फेर दे, फिर शीघ्र ही उसे याद आ जाये या कोई याद दिलाए तो छूटी हुई रकअत को पूरा करे फिर दो सज्दा करे और सलाम फेरे।

उदाहरण : जैसे कोई जोहर की नमाज़ पढ़े और भूलकर तीन रकअत के बाद ही सलाम फेर दे, फिर उसे याद आए या कोई व्यक्ति याद दिलाये तो उसे चाहिए की चौथी रकअत पूरी करे और सलाम फेरे, फिर दो सज्दा करे और सलाम फेरे ।

परन्तु यदि देर से याद आए तो फिर पूर्ण रूप से नमाज़ लौटाए यानी दोबारा नमाज़ पढ़े ।

३. यदि भूल कर पहिला तशहहुद या उस के अतिरिक्त कोई अन्य वाजिब अमल छोड़ दे तो सलाम फेरने से पहिले दो सज्दा कर ले, इस हालत में छूटे हुए वाजिब को पूरा करना जरूरी नहीं, केवल सज्दये सहव करना ही काफी होगा । परन्तु उस वाजिब के स्थान को छोड़ने से पहिले ही याद आ जाए तो उसे पूरा करना अनिवार्य होगा ।

इसी प्रकार यदि उस वाजिब अमल की जगह को छोड़ने और दूसरे अमल के स्थान पर पहुँचने से पूर्व ही याद आ जाए तो उसे लौट कर पूरा करना होगा ।

उदाहरण : जैसे कोई व्यक्ति पहिला तशहहुद भूल कर तीसरी रकअत के लिए पूर्ण रूप से खड़ा हो जाए तो

ऐसी स्थिति में वह वापस न लौटे बल्कि सलाम फेरने से पूर्व दो बार सज्दये सहव कर ले ।

और यदि तश्हहुद के लिए बैठे मगर तश्हहुद पढ़ना भूल जाए और खड़े होने से पहिले उसे याद आ जाए तो ऐसी सूरत में वह तश्हहुद पढ़े फिर अपनी बाकी नमाज़ पूरी करे, उसे सज्दये सहव करना जरूरी नहीं ।

इसी प्रकार यदि तश्हहुद भूल कर खड़ा हो जाए मगर पूरी तरह खड़ा होने से पहिले ही याद आ जाए तो उसे चाहिए कि बैठ जाए और तश्हहुद पढ़े फिर बाकी रकअत पूरी करने के बाद अन्त में दो बार सज्दये सहव करे ।

४. जब किसी को नमाज़ में यह शक हो जाए कि उस ने दो रकअत पढ़ी है या तीन । यदि दोनों पक्ष शक में बराबर हों तो फिर अपनी नमाज़ को दो रकअत मानकर बाकी रकअत पूरी करे, फिर सलाम फेरने से पूर्व दो बार सज्दये सहव करे उस के बाद सलाम फेरे ।

उदाहरण : जैसे - कोई व्यक्ति जोहर की नमाज़ पढ़ रहा हो और उसे दूसरी रकअत में यह शक हो जाए कि यह दूसरी रकअत है या तीसरी ? और फ़ैसला करना

कठिन हो तो उसे दूसरी ही रकअत माने और बाकी रकआत पूरी करने के बाद सलाम फेरने से पूर्व दो बार सज्दये सहव करे फिर सलाम फेरे ।

५. यदि किसी को नमाज़ में यह शक हो कि उसने दो रकअत पढ़ी है या तीन ? और दोनों में से कोई एक राजेह हो तो ऐसी सूरत में राजेह पहलू को अपनाए, चाहे वह दूसरी रकअत हो या तीसरी, फिर बाकी रकअत पूरी करने के बाद सलाम फेरे फिर दो बार सज्दये सहव करे और फिर सलाम फेरे ।

उदाहरण : जैसे कोई व्यक्ति जोहर की नमाज़ पढ़ रहा हो, दूसरी रकअत में यह शक हो जाए कि दूसरी रकअत है या तीसरी ? उस के विश्वास में तीसरी रकअत राजेह हो तो ऐसी अवस्था में उसको तीसरी रकअत मानकर चौथी रकअत पूरी करे फिर सलाम फेरे, उसके बाद दो बार सज्दये सहव करे और फिर सलाम फेरे ।

यदि नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद शक हो जाए तो जब तक पूरी तरह यक़ीन न हो उस शक की ओर ध्यान न दे ।

यदि किसी को बहुत ज़्यादा शक आता हो तो उसे चाहिए कि शक की ओर ध्यान आकर्षित न करे, क्योंकि इस का सम्बन्ध शैतानी वस्वसा (शंका, गुप्त ध्वनि) से है।

والله أعلم، وصلى الله وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه



रोगों के लिए पवित्रता हासिल करने की विधि

१. रोगी के लिए पानी के जरिये पवित्रता हासिल करना जरूरी है, यदि अपवित्रता छोटी हो तो वुजू के जरिये और बड़ी हो तो स्नान के द्वारा पवित्रता प्राप्त करे।
२. यदि पानी उपलब्ध न हो अथवा इस बात का भय हो कि पानी के प्रयोग से उसका रोग बढ़ जायेगा या रोग देर से समाप्त होगा तो ऐसी स्थिति में उसके लिए तयम्मूम के जरिये पवित्रता प्राप्त करने की आज्ञा है।
३. तयम्मूम की विधि यह है कि दोनों हाथ एक ही बार पवित्र मिट्टी पर मारकर अपने पूरे चेहरे पर फेरे तथा कलाई तक दोनों हाथ एक-दूसरे पर फेरे।
४. यदि स्वयं अपने हाथ से पवित्रता हासिल करना कठिन हो तो ऐसी अवस्था में कोई दूसरा व्यक्ति उसे वुजू या तयम्मूम कराये।
५. जिन अँगों की पवित्रता जरूरी है, उन में से यदि

किसी अंग में जखम हो तो उसे चाहिए कि पानी से धोये, और यदि पानी के प्रयोग से हानि का भय हो तो फिर उस पर मसह करे, मसह का तरीका यह है कि अपने हाथ को पानी से भिगाकर उस जखम पर फेरे, और यदि मसह करने से भी हानि का खतरा हो तो फिर इस के बदले तयम्मूम करे ।

६. यदि जखम पर या टूटे हुए अंग पर पट्टी बँधी हुई हो तो धोने के बदले उस पर मसह करना पर्याप्त होगा, तयम्मूम करने की जरूरत नहीं है ।

७. दीवार या कोई भी पवित्र चीज जिस पर गुबार (धूल) हो उस पर हाथ मार कर तयम्मूम करना जाइज है, परन्तु अगर दीवार रंग या पेन्ट आदि से लीपी गई हो तो जब तक उस पर गुबार न लग जायें उस से तयम्मूम करना जाइज नहीं है ।

८. यदि भूमि दीवार अथवा गुबार आलूद किसी वस्तु पर तयम्मूम करना असम्भव हो तो ऐसी स्थिति में किसी बर्तन या रूमाल आदि में मिट्टी रखकर उससे तयम्मूम करना जायेज है ।

९. जब कोई व्यक्ति किसी नमाज के लिए तयम्मूम करे

और दूसरी नमाज के समय तक पवित्रता बाक़ी हो तो उसी तयम्मूम से दूसरी नमाज पढ़ सकता है, दोबारा तयम्मूम करने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि उसकी पवित्रता बाक़ी है और जब तक उसे अपवित्र करने का कोई कारण पेश न आए नया तयम्मूम करने की ज़रूरत नहीं।

१०. रोगी पर यह वाजिब (अनिवार्य) है कि अपना शरीर साफ़ सुथरा रखे, यदि वह इसकी ताक़त न रखता हो तो फिर अपनी अवस्था में ही नमाज पढ़ ले, उसकी नमाज सहीह मानी जायेगी, स्थिति सुधरने पर नमाज लौटाने की ज़रूरत नहीं।

११. रोगी के लिए अनिवार्य है कि पवित्र एवं साफ़ सुथरी पोशाक में नमाज पढ़े, यदि कपड़े में नजासत (गंदगी) लगी हो तो उसे धोना या बदलना ज़रूरी है, यदि ऐसा करना उसके लिए सम्भव न हो तो फिर उसी दशा में नमाज पढ़े, उसकी नमाज सहीह मानी जायेगी, उसे पुनः लौटाना ज़रूरी नहीं है।

१२. बीमार के लिए ज़रूरी है कि साफ़ सुथरी एवं पवित्र चीज़ पर नमाज पढ़े, यदि स्थान अपवित्र हो तो उसे

धोना या बदलना जरूरी है, या फिर उस पर कोई पवित्र चीज़ बिछा दी जाए, और यदि ऐसा करना मुमकिन न हो तो फिर उसी हालत में नमाज़ पढ़े, उसकी नमाज़ सहीह मानी जायेगी, पुनः उसे लौटाने की जरूरत नहीं।

१३. रोगी के लिए निर्धारित समय पर नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है, पवित्रता प्राप्त करने की ताकत न पाने पर नमाज़ को उसके समय से टाल कर पढ़ना जाइज नहीं है, अपनी शक्ति अनुसार जहाँ तक सम्भव हो पवित्र होने की कोशिश करे और निश्चित समय पर नमाज़ पढ़े, यद्यपि उसके शरीर, पोशाक या स्थान पर ऐसी गंदगी लगी हो जिसे दूर करने की उस के पास शक्ति न हो।



रोगी के प्रति नमाज पढ़ने की विधि

१. रोगी के लिए खड़े होकर फर्ज नमाज पढ़ना अनिवार्य है, आवश्यकतानुसार किसी ओर झुकना अथवा दीवार या लाठी आदि का सहारा लेना और टेक लगाना उसके लिए जाइज है ।
२. यदि खड़े होने की शक्ति न हो तो बैठ कर नमाज पढ़े, क्रियाम एवं रुकूअ के स्थान पर चार जानू होकर बैठना सर्वश्रेष्ठ है ।
३. यदि बैठ कर नमाज पढ़ने की शक्ति न हो तो पहलू (पार्श्व) के बल लेट कर क़िब्ला की ओर चेहरा करके नमाज पढ़े, दायें पहलू के पक्ष लेटना उत्तम है, यदि क़िब्ला की दिशा चेहरा करना असम्भव हो तो फिर वह जिस दिशा लेटा हो उसी ओर नमाज पढ़ ले, उसकी नमाज सहीह मानी जायेगी और उसे पुनः लौटाने की ज़रूरत नहीं ।
४. यदि बैठ कर नमाज पढ़ने की ताक़त न हो तो फिर पीठ के बल चित लेट कर और दोनों पाँव क़िब्ला की दिशा फैलाकर नमाज पढ़े, यदि अपना सिर हल्का सा उठाकर क़िब्ला की ओर कर सके तो यह अति उत्तम है, और यदि दोनों पाँव काबा की दिशा

करना मुमकिन न हो तो फिर जिस अवस्था में हो उसी में नमाज पढ़े, नमाज सहीह हो जायेगी और उसे दोबारा लौटाना जरूरी नहीं।

५. बीमार के लिए नमाज पढ़ते समय रुकूअ एवं सज्दा करना जरूरी है, यदि रुकूअ और सज्दा करने की शक्ति न हो तो उन दोनों स्थान पर अपने सिर झुका कर इशारा करे, रुकूअ के अपेक्षा सज्दा के लिए सिर थोड़ा अधिक झुकाये।

यदि रुकूअ करने की शक्ति हो परन्तु सज्दा करने से विवश हो तो रुकूअ की हालत में रुकूअ करे और सज्दे की हालत में सिर झुका कर इशारा करे।

यदि सज्दा करने की ताकत हो मगर रुकूअ करने से मजबूर हो तो फिर सज्दा की स्थिति में सज्दा करे और रुकूअ के स्थान पर सिर झुकाकर संकेत (इशारा) करे।

६. यदि रुकूअ एवं सज्दे के स्थान पर सिर के जरिये इशारा करने की ताकत न हो तो फिर दोनों आँखों के द्वारा संकेत करे। रुकूअ के लिए थोड़ी देर आँखें बंद रखे जबकि सज्दा के लिए रुकूअ के अपेक्षा कुछ अधिक देर बंद रखे।

कुछ बीमार लोग अँगुलियों से इशारा करते हैं जो कि सहीह नहीं है, अँगुलियों से संकेत करने का प्रमाण न तो कुरआन एवं हदीस में है न किसी धार्मिक विद्वान ने इसका फतवा दिया है।

७. यदि सिर अथवा आँख से इशारा करने की शक्ति न हो तो फिर दिल (हृदय) के जरिये नमाज पढ़े, “अल्लाहु अकबर” कहकर किराअत करे एवं रुकूअ, सज्दा, क्रियाम तथा काअदा के लिए दिल में नीयत करे। हर व्यक्ति को उसकी नीयत अनुसार बदला (प्रतिफल) मिलेगा।

८. रोगी के लिए प्रत्येक नमाज उसके निर्धारित समय पर पढ़ना अनिवार्य है, इसी प्रकार यथा संभव नमाज के वाजिब अमल को पूरा करना जरूरी है।

यदि हर नमाज को उसके निश्चित समय पर पढ़ना रोगी के लिए कष्टपूर्ण हो तो जुहर एवं अस की नमाज एक साथ तथा मगरिब एवं इशा की नमाज एक साथ एकत्रित करके पढ़े, चाहे तो जमा तकदीम करे यानी अस की नमाज को जुहर के समय और इशा की नमाज को मगरिब के समय मुकद्दम (प्रथम) कर के एक साथ पढ़े, या चाहे तो जमा ताखीर करे अर्थात् जुहर की नमाज अस के समय एवं मगरिब की नमाज इशा के समय मुअख्खर

(विलम्ब) करके पढ़े, परन्तु फज्र की नमाज को उससे पहिले या बाद वाली नमाज के साथ मिलाकर पढ़ना जायेज नहीं है, उसे निर्धारित समय पर अलग ही पढ़े ।

९. यदि रोगी मुसाफिर (प्रवासी) हो, विदेश में उसका उपचार किया जा रहा हो तो ऐसी स्थिति में चार रकअत वाली नमाजों को कस्र (कमी) करके पढ़े, अर्थात् जुहर, अस्त्र एवं इशा की नमाजों को केवल दो-दो रकअत पढ़े, यहाँ तक कि स्वदेश वापस लौट आए, चाहे यात्रा की अवधि अधिक हो या थोड़ी ।

अल्लाह ही तौफ़ीक़ एवं साहस देने वाला है ।

लेखक :

अल्लाह की दया का भिक्षुक :
मुहम्मद सालेह अल-उसैमीन

अनुवादक :

मुहम्मद सलीम साजिद अल-मदनी
धनौजी-३, धनुषा (नेपाल)
(रियाध : १५/७/१४२५ हिजरी)



